इंद्रावती कहे तूं सई मेरी, धनी मिले मुझे इत।
पिउ ने सब पूरन करी, जो मैं करी उमेदा तित।। १० ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, तू मेरी सखी है। सुन, धनी मुझे यहां माया में मिले हैं। मैंने जो जो चाहना परमधाम में की थी वह सब उन्होंने यहां पूरी कर दी है।

सई तूं मेरी बाई रतन, मोहे मिले छबीले लाल।
करी मुझे सोहागनी, अब मैं भई निहाल।। ११ ।।

हे मेरी बहन रतनबाई! (बिहारीजी) मुझे सुन्दर लाड़ले धनी मिल गए हैं। मुझे उन्होंने अविधार (अंगीकार) कर सुहागवंती बनाया है। अब मैं असीम प्रसन्न हूं।

मैं एक विध मांगी पिउ पे, पिउ ने कई विध करी रोसन।
बातें इन रोसन की, करसी जाए वतन।।। १२ ।।

मैंने तो धनी से एक ही बात मांगी थी (कि मुझे धाम क्यों नहीं दिखता)। अब धनी ने आकर कुल वाणी ही मेरे अन्दर रख दी। अब इस ज्ञान की बातें घर चलकर करेंगे।

।। प्रकरण ।। २८ ।। चौपाई ।। ६६२ ।।

लखमी जी को दृष्टांत

मैं जानूं निध एकली लेऊं, धाम धनी मेरे जीव में ग्रहूं।
ए सुख और काहूं ना देऊ, फेर फेर तुमको काहे को कहूं।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मेरे मन में इच्छा है कि धनी को अपने तन में बिठाकर अकेली ही आनन्द लूं और यह सुख किसी और को न दूं। हे साथजी! मैं तुमको बार-बार जगाने को क्यों कहूं और यह सुख मैं किसी को क्यों दूं?

ए वचन यों कहे न जाए, जीव दुख पावे ना कहे जुबांए।
एह फिकर मैं बोहोतक करूं, पर देह ना पकड़े जो हिरदे धरूं।। २ ।।

यह वचन इस तरह से नहीं कहे जाते। इनको कहने से जीव बड़ा दुःखी होता है। यह जबान पर ही नहीं आते। इसकी मैं बहुत चिन्ता करती हूं, किन्तु माया का मेरा यह तन इन वचनों को पकड़कर हृदय में नहीं छिपा सकता।

धनी कहावे तो यों कहूं, ना तो ए सुख औरों क्यों देऊं।
ए देते मेरा जीव निकसे, ए बानी मेरे जीव में बसे।। ३ ।।

धनी कहलाते हैं तो यह कहती हूं, नहीं तो यह सुख किसी और को क्यों दूं? यह धनी की वाणी मेरे जीव के अन्दर रहती है। इस वाणी को कहते ऐसा लगता है जैसे मेरा जीव ही निकल जाएगा।

ए निध लई मैं कसनी कर, श्री धाम धनी चरणों चित धर।
मैं बोहोतक करूं अंतर, पर सागर पूर प्रगट करे घर।। ४ ।।

इस वाणी (न्यामत) को मैंने धनी के चरणों को चित्त में लेकर बड़ी कठिनाई से पाया है और इसे बहुत छिपाना चाहती हूं, पर सागर के पूर (प्रवाह) की तरह यह वाणी घर की सुध देती है।

ए बानी धनी अंतरगत कही, केहेने की सोभा कालबुत को भई।
ना तो एह वचन क्यों कहे जाएं, अंदर कलेजे ज्यों लगे घाए।। ५ ।।

यह वाणी मेरे धनी मेरे अन्दर बैठकर स्वयं कह रहे हैं। मेरे शरीर को मात्र शोभा दे रहे हैं, नहीं तो यह वाणी इतनी सरलता से नहीं कही जाती। मेरे कलेजे में चोट लगती है।

Nijanand App

जिन जानो वचन अचेत में कहे, ए केहेते अनेक दुख भए।
जब मैं विचारूं चित में आन, ए कैसी मुख निकसी वान।। ६ ।।

ऐसा नहीं समझना कि मैं बेहोशी में बोल रही हूं। इसको कहने में मुझे बहुत कठिनाई होती है। जब मैं चित्त में विचार करके देखती हूं तो लगता है कि ऐसी वाणी मेरे मुख से कैसे निकली?

मेरी बुधें लुगा न निकसे मुख, धनी जाहेर करें अखंड घर सुख।
अब साथ कछुक करो तुम बल, तो पूरन सोभा ल्यो नेहेचल।। ७ ।।

मेरी बुद्धि से तो एक शब्द भी नहीं निकलता। यह तो धनी हैं जो अन्दर बैठकर घर के अखण्ड सुख बता रहे हैं। हे साथजी ! अब तुम भी कुछ हिम्मत करो और परमधाम के सब सुख लो।

ए बोहोत भांत है भारी वचन, जो कदी देखो आप होए चेतन।
इन वचन पर एक कहूं विचार, सुनो साथ मेरे धाम के आधार।। ८ ।।

यदि सावचेत होकर देखो तो यह वचन बहुत भारी हैं। हे मेरे प्राणों के आधार सुन्दरसाथजी ! इन वचनों पर मैं अपना एक विचार बताती हूं।

धड़थें सिर कोई न्यारा करे, तो आधा वचन ना मुखथें परे।
जो कोई सारे सकल संधान, तो कह्या न जाए पाओ लुगा निरवान।। ९ ।।

धड़ से सिर भी कोई अलग कर दे तो भी मुख से आधा वचन भी नहीं कहा जाता। इसी तरह से शरीर के भी सब अंग अलग-अलग कर दिए जाएं तो भी एक शब्द का चौथाई भाग भी नहीं कहा जाता।

साथ कारन जीव सगाई जान, सेवियो धाम धनी पेहेचान।
यों केहेके पकड़ न देवे कोए, यों देते न लेवे सो अभागी होए।। १० ।।

हे सुन्दरसाथजी ! मैं तुम्हें अपना साथी जानकर कहती हूं कि धाम धनी की पहचान कर सेवा करना। इस तरह से कहकर धनी को तुम्हारे हाथ में कोई नहीं देगा। ऐसे देने पर भी जो न ले, वह बदनसीब है।

तुम साथ मेरे सिरदार, एह दृष्टांत लीजो विचार।
रोसन वचन करूं प्रकास, सुकजी की साख लीजो विश्वास।। ११ ।।

हे मेरे धाम के सिरदार सुन्दरसाथजी ! एक दृष्टान्त देती हूं। तुम उस पर विचार करना। जो वचन कह रही हूं उसकी गवाही पर शुकदेवजी के वचनों को सुनकर विश्वास करना।

ए देख के नींद टालो भरम, इन वचनों जीव करो नरम।
वचन जीवसो करो विचार, तब सुख अखंड होए आधार।। १२ ।।

इस दृष्टान्त को सुनकर अपनी भ्रम की नींद को हटाओ और अपने जीव को नरम करो (अपना अहं हटाओ) तथा इन वचनों का जीव से मिलकर विचार करो तो तुम्हें अखण्ड प्रीतम के सुख की प्राप्ति होगी।

पिउ पेहेचान टालो अंतर, परआतम अपनी देखो घर।
इन घर की कहा कहूं बात, वचन विचार देखो साख्यात।। १३ ।।

धनी को पहचान कर यह माया का परदा उड़ा दो और अपने घर तथा परआतम को देखो। अपने घर की बातों को वचनों से क्या कहूं? खुद (स्वयं) साक्षात् अनुभव करो।

अब जाहेर लीजो दृष्टांत, जीव जगाए करो एकांत।
चौद भवन का कहिए धनी, लीला करे बैकुंठ विखे घनी।। १४ ।।

अब अपने जीव को जागृत कर ध्यान से इस दृष्टान्त को समझना। चौदह लोकों के जो भगवान विष्णु हैं वह अपने बैकुण्ठ में बैठकर लीला करते हैं।

Nijanand App

लखमी जी सेवे दिन रात, सो ए कहूं तुमको विख्यात।
जो चाहे आप हेत घर, सो सेवे श्री परमेश्वर।। १५ ।।

लक्ष्मीजी इनकी दिन-रात सेवा करती हैं, जिनकी हकीकत तुमको बताती हूं। जो अपनी भलाई चाहते हैं, वह इनको परमेश्वर मानकर सेवा करते हैं।

ब्रह्मादिक नारद कई देव, कई सुर नर करे एह सेव।
ब्रह्मांड विखे केते लेऊं नाम, सब कोई सेवें श्री भगवान।। १६ ।।

ब्रह्मा, नारद, आदि कई देवता तथा मनुष्य इनकी सेवा में लगे रहते हैं। इस ब्रह्माण्ड में और किसके नाम लूं, सब कोई भगवान विष्णु की ही सेवा करते हैं।

ए लीला सेवे कर सार, सेवतां न पावें पार।
पेहेले सेवा करी है घनें, सो देखियो सुकव्यास वचनें।। १७ ।।

लक्ष्मीजी इस तरह से भगवान की सेवा करती हैं कि उनकी सेवा का कोई पार नहीं है। इन्होंने पहले भी बहुत सेवा की है, जो शुकदेव और व्यास की वाणी से देखना।

ए तो है ऐसा समरथ, सेवक के सब सारे अरथ।
अब तुम याको देखो ग्यान, बड़ी मत का धनी भगवान।। १८ ।।

यह विष्णु भगवान समर्थ हैं। अपने सेवकों की सब चाहना पूरी करते हैं। अब तुम इन विष्णु भगवान के ज्ञान को देखो, जो इस संसार में बड़ी बुद्धि वाले कहलाते हैं।

एक समें बैठे धर ध्यान, बिसरी सुध सरीर की सान।
ए हमेसा करे चितवन, अंदर काहूं न लखावे किन।। १९ ।।

एक समय विष्णु भगवान ध्यान में बेसुध होकर बैठे थे। यह तो सदा चितवन करते हैं, परन्तु किसी को बताते नहीं।

ध्यान जोर एक समें भयो, लाग्यो सनेह ढांप्यो न रह्यो।
लखमीजी आए तिन समें, मन अचरज भए विस्मे।। २० ।।

एक समय प्रेम अधिक होने से ध्यान मग्न हो गए। लक्ष्मीजी उसी समय आयीं, यह देखकर मन में आश्चर्य करने लगीं।

आए लखमीजी ठाढ़े रहे, भगवानजी तब जाग्रत भए।
करी विनती लखमीजी ताहें, तुम बिन हम और कोई सुन्या नाहें।। २१ ।।

लक्ष्मीजी तब तक खड़ी रहीं जब तक भगवान जागृत नहीं हुए। उनके सावचेत होने पर लक्ष्मीजी ने कहा, हे स्वामी ! आपके बिना हमने किसी और का नाम नहीं सुना है।

किनका तुम धरत हो ध्यान, सो मोहे कहो श्री भगवान।
मेरे मन में भयो संदेह, कहे समझाओ मोको एह।। २२ ।।

आप किसका ध्यान करते हो? हे भगवान! मुझे बताओ। मेरे मन में संशय हो गया है। मुझे समझाओ।

कौन सरूप बसे किन ठाम, कैसी सोभा कहो कहा नाम।
ए लीला सुनो श्रवन, फेर फेर के लागों चरन।। २३ ।।

वह कौन-सा स्वरूप है? कहां रहता है? कैसी शोभा है? क्या नाम है? इस लीला को अपने कानों से सुनना चाहती हूं। ऐसा कहकर लक्ष्मीजी ने चरणों में प्रणाम किया।

Nijanand App

सुनो लखमीजी एह वचन, एह बात प्रकासो जिन।
लखमीजी कहो त्यों करूं, मेरा अंग तुमथे न परूं।। २४ ।।

विष्णु भगवान बोले, हे लक्ष्मीजी वचन सुनो। यह बात मैं नहीं बता सकता, बाकी जो कहो सो करूं। मैं तुमसे कोई अलग नहीं हूं।

सुनो लखमीजी कहूं तुमको, पेहेले सिवे पूछा हमको।
इन लीला की खबर मुझे नांहें, सो क्यों कहूं मैं इन जुबांए।। २५ ।।

सुनो लक्ष्मीजी ! यह बात पहले शिवजी ने भी पूछी थी। इस लीला की मुझे खबर नहीं है। मैं इस जबान से इसका वर्णन कैसे करूं?

एह वचन जिन करो उचार, न तो दुख होसी अपार।
और इतका जो करो प्रश्न, सो चौदे लोक की करूं रोसन।। २६ ।।

इन वचनों को मत पूछो, नहीं तो असीम दुःख होगा। यहां का कोई प्रश्न करो तो चौदह लोकों की बात बताऊं।

जिन आसंका आनो एह, एह जिन पूछो सन्देह।
लखमीजी तुम करो करार, मुखथें वचन न आवे बाहार।। २७ ।।

यह संशय तुम मत लाओ और न ही यह सन्देह वाली बात ही पूछो। लक्ष्मीजी ! तुम धीरज (धैर्य) रखो। यह वचन मेरे मुंह से बाहर नहीं निकलेंगे।

तब लखमीजी बड़ो पायो दुख, कह न सके कलपे अति मुख।
मोसों तो राख्यो अंतर, अब रहूंगी मैं क्यों कर।। २८ ।।

तब लक्ष्मीजी को बहुत दुःख हुआ। मुख से कुछ कह न सकीं और रोने लगीं। विचार करने लगीं कि मुझसे विष्णु भगवान ने अन्तर (छिपाया) किया है। अब मैं कैसे रहूंगी?

नैनों आंसू बहुबिध झरे, फेर फेर रमा विनती करे।
धनी एह अंतर सह्यो न जाए, जीव मारो मांहें कलपाए।। २९ ।।

उनकी आंखों से आंसू गिरने लगे। लक्ष्मीजी बार-बार विनती करने लगीं, हे प्रभु ! यह आपका अन्तर मेरे से सहन नहीं होता। मेरा जीव अन्दर से रो रहा है।

अब क्यों कर राखूं जीव हटाए, कलेजा मेरा कटाए।
कंपमान होए कलकले, उठी आह अंतस्करन जले।। ३० ।।

अब मैं अपने जीव को कैसे जीवित रखूं? मेरा कलेजा फट रहा है। कांपते और बिलखते हुए उनके अन्दर से हाय-हाय की सांसें निकलने लगीं।

अब जो धनी करो मेरी सार, तो ए लीला केहेनी निरधार।
बोहोत बेर मने किया सही, अनेक विध सिखापन दई।। ३१ ।।

लक्ष्मीजी बोलीं, हे मेरे धनी ! मेरी सुध लो। यह लीला तो अवश्य ही बतानी पड़ेगी। भगवान ने अनेक बार समझाकर मना किया।

मेरा जीव क्योंए न रहे, लखमीजी फेर फेर यों कहे।
तब बोले श्री भगवान, लखमीजी तूं नेहेचे जान।। ३२ ।।

लक्ष्मीजी कहती हैं, मेरा जीव किसी तरह से नहीं रह सकता। भगवानजी बोले, तुम निश्चय जानो।

Nijanand App

कोटान कोट करो प्रकार, तो एता तुम जानो निरधार।
मेरी जुबां न वले एह वचन, एह दृढ़ करो जीवके मन।। ३३ ।।

तुम करोड़ों उपाय कर लो तो भी यह निश्चय जानो कि मेरी जबान यह वचन निकाल ही नहीं सकती। तुम इसे मन और जीव में दृढ़ करके समझ लो।

लखमीजी कहे सुनो अब राज, मेरे आतम अंग उपजत दाझ।
नहीं दोष तुमारा धनी, अप्राप्त मेरी है घनी।। ३४ ।।

लक्ष्मीजी कहती हैं, हे मेरे नाथ ! सुनो, मेरे अंग में आग लग रही है। हे नाथ ! इसमें तुम्हारा दोष नहीं है। मैं ही उसकी पात्र नहीं हूं।

अब सरीर मेरा क्यों रहे, ए अगनी जीव न सहे।
अब अग्या मांगूं मेरे धनी, करूं तपस्या देह कसनी।। ३५ ।।

मेरा तन कैसे रहेगा? इस आग को जीव सहन नहीं कर सकता। अब मैं इतनी आज्ञा चाहती हूं कि मैं तन को कष्ट देकर तपस्या करूं।

भगवानजी बोले तिन ताओ, लखमीजी बेर जिन ल्याओ।
तब कलप्या जीव दुख अनंत कर, उपज्यो वैराग लियो हिरदे धर।। ३६ ।।

भगवानजी तुरन्त बोले, हे लक्ष्मीजी ! शुभ कार्य में देर मत करो। तब लक्ष्मीजी का मन बहुत दुःखी हुआ तथा मन में वैराग्य हो गया।

लखमीजी को आसा थी घनी, जानों विछोहा न देसी धनी।
अब चरनों लाग लखमीजी चले, प्यादे पांउ रोवे कलकले।। ३७ ।।

लक्ष्मीजी को पूरी आशा थी कि उनके नाथ उनको नहीं छोड़ेंगे। अब चरण लगकर लक्ष्मीजी रोते बिलखते पैदल चल पड़ीं।

इन समें विरह कियो अति जोर, बड़ो दुख पाए कियो अति सोर।
एक ठौर बैठे जाए दमे देह, भगवानजी सों पूरन सनेह।। ३८ ।।

उस समय उन्हें विरह का बड़ा भारी दुःख हुआ। वह दहाड़ मारकर रोने लगीं। एक ठिकाने (स्थान पर) जाकर देह दमन करने लगीं, परन्तु चित्त तो भगवान विष्णु में ही रहा।

सीत धूप बरखा ना गिने, करे तपस्या जोर अति घने।
सनेह धर बैठे एकान्त, एते सात भए कल्पांत।। ३९ ।।

ठण्ड, गर्मी, वर्षा की परवाह न कर जोर से तपस्या में लग गईं। एकान्त में बैठकर भगवान विष्णु के प्रेम में मग्न हो गईं। इस तरह से सात कल्पान्त का समय बीत गया।

तब ब्रह्माजी खीरसागर, आए विष्णु पे बैकुंठ घर।
ए प्रभूजी ए क्या उतपात, लखमीजी तप करे कल्पांत सात।। ४० ।।

तब ब्रह्मा और क्षीरसागर (श्री लक्ष्मीजी के पिता) विष्णुजी के पास वैकुण्ठ में आए और बोले—हे प्रभुजी ! यह क्या झगड़ा है, जो लक्ष्मीजी सात कल्पान्त से तपस्या कर रही हैं?

भगवानजी बोले तब तांहें, दोष हमारा कछुए नांहें।
तो भी वचन तुमको कहे जाए, लखमीजी बोहोत दुख पाए।। ४१ ।।

भगवानजी बोले, इसमें मेरा कोई दोष नहीं है, तब ब्रह्मा और क्षीरसागर दोनों ने कहा, लक्ष्मीजी बहुत दुःखी हैं, कुछ तो बताओ?

Nijanand App

एता रोष तुम ना धरो, लखमीजी पर दया करो।
तुम स्वामी बड़े दयाल, लखमीजी दुख पावे बाल।। ४२ ।।

हे भगवान ! इतना गुस्सा मत करो। लक्ष्मीजी पर कृपा करो। तुम बड़े दयालु हो और लक्ष्मीजी में तो बाल बुद्धि है। वह दुःख पा रही हैं।

स्वामीजी ए ढील करो जिन, लखमीजी बुलाओ ततखिन।
चरन ग्रहे तब खीरसागरें, और फेर फेर ब्रह्मा विनती करे।। ४३ ।।

ब्रह्माजी और क्षीरसागर विष्णु भगवान से विनती करते हैं। हे स्वामी ! देरी मत करो और लक्ष्मीजी को तुरन्त बुलाओ। क्षीरसागर ने चरण पकड़ लिए और ब्रह्माजी विनती करते हैं।

चलो प्रभुजी जाइए तित, बुलाए लखमीजी आइए इत।
तब दया कर आए भगवान, लखमीजी बैठे जिन ठाम।। ४४ ।।

चलो, प्रभुजी वहां चलें और लक्ष्मीजी को यहां बुला लाएं। तब दया करके विष्णु भगवान उस ठिकाने पर, जहां लक्ष्मीजी तपस्या कर रही थीं, आए।

लखमीजी परनाम कर आए, भगवानजी तब सनमुख बुलाय।
लखमीजी चलो जाइए घरे, तब फेर रमा बानी उचरे।। ४५ ।।

लक्ष्मीजी ने प्रणाम किया। भगवानजी ने सामने बुलाया और कहा, चलो, लक्ष्मीजी घर चलो, लक्ष्मीजी फिर बोलीं।

धनी मेरे कहो वाही वचन, जीव बोहोत दुख पावे मन।
जो तप करो कल्पांत एकईस, तो भी जुबां ना वले कहे जगदीस।। ४६ ।।

हे मेरे नाथ ! वही वचन कहो। मेरा जीव बड़ा दुःखी है। भगवानजी कहते हैं कि हे लक्ष्मीजी ! इक्कीस कल्पान्त भी तप करो तो भी मेरी जबान नहीं बोल सकती।

देखलाऊं मैं चेहेन कर, तब लीजो तुम हिरदे धर।
तब ब्रह्मा और खीरसागर दोए, लखमीजी की विनती होए।। ४७ ।।

मैं तुम्हें लीला करके बताऊंगा। तब तुम अपने हृदय में उनका ध्यान कर लेना। तब ब्रह्मा और क्षीर-सागर ने मिलकर कहा, लक्ष्मीजी ! तुम्हारी विनती स्वीकार हो गई।

लखमीजी उठो तत्काल, दया करी स्वामी दयाल।
अब जिन तुम हठ करो, आनंद अंतस्करन में धरो।। ४८ ।।

दोनों कहते हैं, जल्दी उठो। स्वामी ने कृपा कर दी है। अब तुम हठ मत करो। दिल में खुशी मनाओ।

तब लखमीजी लागे चरनें, यों बुलाए ल्याए आनंद अति घनें।
तब ब्रह्मा खीरसागर सुख पाए फिरे, दोऊ आए आप अपने घरे।। ४९ ।।

तब लक्ष्मीजी ने चरणों में प्रणाम किया और इस तरह आनन्द मंगल से घर आ गईं। तब ब्रह्मा और क्षीरसागर सुख प्राप्त कर अपने-अपने घर चले गए।

अब ए विचार तुम देखो साथ, ना वली जुबां बैकुंठ नाथ।
ग्रही वस्त भारी कर जान, तो भी वचन ना कहे निरवान।। ५० ।।

हे साथजी ! विचार करके देखो कि बैकुण्ठ के नाथ विष्णु भगवान भी एक शब्द भी पार का नहीं कह सके। पार के ज्ञान को भारी करके ग्रहण किया, तो भी एक वचन न कह सके।

Nijanand App

ना तो बैकुंठनाथ को कैसी खबर, बिना तारतम क्या जाने मूल घर।
और भी खबर कछुए ना कही, तो भी निध भारी कर ग्रही।।५१ ।।

बैकुण्ठनाथ विष्णु भगवान को बेहद की खबर नहीं थी। बिना तारतम ज्ञान के अक्षरातीत धाम की पहचान विष्णु भगवान को कैसे हो सकती है? इसलिए लक्ष्मीजी को और खबर न दे सके। पार के वचन भारी कर ग्रहण किए।

बिना भारी कौन भार उठावे, मुखथें वचन कह्यो न जावे।
जब भया कृष्ण अवतार, रुकमनी हरन कियो मुरार।।५२ ।।

बेहद के वचन को बेहद के साथी ही सुन सकते हैं। बाकी किसी के भी मुख से पार के वचन नहीं निकल सकते। जब श्री कृष्ण अवतार हुआ और उन्होंने रुक्मिणी का हरण किया।

माधवपुर व्याही रुकमनी, धवल मंगल गावे सोहागनी।
गाते गाते लिया बृज नाम, तब पीछे भोम पड़े भगवान।।५३ ।।

माधवपुर में रुक्मिणी के साथ विवाह हो रहा था। सुहागिनी स्त्रियां मंगलगीत गा रही थीं। उन्होंने गाते गाते बृज का नाम लिया। उस समय भगवान मूर्छित होकर गिर गए।

तब नैनों आंसू बोहोत जल आए, काहूपे न रहे पकराए।
सुख आनन्द गयो कहूं चल, अंग अंतस्करन गए सब गल।।५४ ।।

उनकी आंखों से बहुत आंसू आए। पोंछने पर भी आंसू नहीं रुके। शादी का सुख आनन्द सब भूल गया। अंतस्करण में लीला (प्रतिबिम्ब) याद आ गई।

तब सब किने पायो अचरज, यों लखमीजी को देखाया बृज।
सोले कला दोऊ सरूप पूरन, ए आए हैं इन कारण।।५५ ।।

तब सबको बड़ी हैरानी हुई। इस तरह से लक्ष्मीजी को बृज की लीला के चिन्तन (गोलोक की शक्ति) का ज्ञान दिया। लक्ष्मीजी और भगवान श्री कृष्ण, सोलह कला सम्पूर्ण बैकुण्ठनाथ के अवतार हैं। इसी वास्ते आए हैं।

लोक जाने आए असुरों कारन, विष्णु कृष्ण देह धर पूरन।
ए हुकमें असुर कई देवे उड़ाए, ऐसा बल है बैकुंठराए।।५६ ।।

दुनियां जानती है कि विष्णु भगवान कृष्ण के तन में राक्षसों के कारण आए हैं। भगवान विष्णु तो इतने शक्तिशाली हैं कि उनके हुकम से ही कई राक्षस मर जाते हैं।

क्या समझें लोक अंदर की बात,दिखलावने लखमीजी को आए साख्यात।
उठ बैठे श्री कृष्णजी पूरन किया काम, यो लखमीजी की भानी हाम।।५७ ।।

बाहरी दुनियां अन्दर की बातों को क्या जाने? भगवान विष्णु लक्ष्मीजी को लीला दिखाने के लिए आए थे। श्री कृष्णजी शादी मण्डप में उठकर बैठ गए और लक्ष्मीजी की चाहना मिटाई।

ए चित में विचारो रही, ए इसारत सुकें कही।
ए लीला सुकें नीके कर गाइं, जो लखमीजी को भगवानें देखाई।।५८ ।।

हे साथजी ! चित्त में विचार कर के देखो। यह गहरी बात शुकदेवजी ने इशारे में कही। जो लीला भगवानजी ने लक्ष्मीजी को दिखाई उसका शुकदेवजी ने अच्छी तरह वर्णन किया है।

Nijanand App

ए बृज लीला जो अपनी, जाकी अस्तुति करत हैं धनी।
पेहेले जो लीला तुम बृज में करी, अछर सदासिव चित में धरी।। ५९ ।।

यह बृज लीला अपनी है। (बृज अखण्ड)। जिसकी वन्दना ब्रह्माण्ड के भगवान विष्णु करते हैं। साथजी! तुमने जो बृज में लीला की थी वह अक्षर ब्रह्म के चित्त में (सबलिक में) अखण्ड है।

रास लीला जो तुम बनमें किध, सो अछर सरूपें ग्रही जाग्रत बुध।
ता लीला को ए प्रतिबिंब, जो विष्णुए देखाई रमा को सनंध।। ६० ।।

हे साथजी ! तुमने जो रास लीला वन में की, उसे अक्षर ब्रह्म ने जागृत बुद्धि से ग्रहण कर लिया। उसी लीला के प्रतिबिम्ब को भगवान विष्णु ने लक्ष्मीजी को दिखाया।

तो वचन तुमको कहे जाएं, जो तुम धाम की लीला मांहें।
बृजवालो पिउ सो एह, वचन अपन को केहेत हैं जेह।। ६१ ।।

हे साथजी ! यह वचन तुमको इसलिए कहे जाते हैं कि तुम मेरे धाम की लीला के साथी हो। यह वही बृज के वालाजी हैं, जो हमको इस ब्रह्माण्ड में ज्ञान दे रहे हैं।

रास मिने खेलाए जिने, प्रगट लीला करी है तिने।
धनी धाम के केहेलाए, ए जो साथ को बुलावन आए।। ६२ ।।

जिन्होंने रास की लीला दिखाई, वही यह वालाजी हैं। अब लीला प्रगट करके बता रहे हैं। यही अपने धाम के धनी हैं, जो साथ के बुलाने के वास्ते आए हैं।

तुम कारन मैं कह्या दृष्टांत, जीव सो वचन विचारो एकांत।
बैकुंठ ठौर तित का ग्यान, केहेने वाला श्री भगवान।। ६३ ।।

इस वास्ते मैंने तुमको दृष्टान्त देकर समझाया। अब अपने चित्त में एकान्त में विचार कर देखना। बैकुण्ठ जैसे स्थान का ज्ञान कहने वाले स्वयं भगवान विष्णु हैं।

लखमीजी तहां श्रोता भई, कई बिध कसनी कर कर रही।
तो भी न पाया एक वचन, तुम धाम धनी ले बैठे धन।। ६४ ।।

लक्ष्मीजी वहां सुनने वाली (श्रोता) हैं, जिन्होंने कई तरह से कष्ट उठाए तो भी एक वचन को नहीं सुन सकीं। पर हे सुन्दरसाथजी ! आप तो पूर्ण ब्रह्म को साक्षात् लेकर बैठे हो।

अजहूं न तुम टालो भरम, क्यों न करत हो जीव नरम।
ए नौतनपुरी जो कही नगरी, श्री देवचन्दजीऐं लीला करी।। ६५ ।।

अब भी तुम अपने संशय मिटाकर अपने जीव को नरम (निर्मल) क्यों नहीं करते ? यह जो नौतनपुरी नगरी है, इसमें श्री देवचन्द्रजी के तन में उन्होंने लीला की है।

ए प्रगट वचन किए अपार, तो भी न हुई तुमें सुध सार।
छोड़ो अमल माया जोर कर, जीव जगाओ वचन चित धर।। ६६ ।।

यह प्रत्यक्ष वचन अनेक बार तुमको कहे तो भी तुम्हें सुध नहीं आई। अब हिम्मत करके माया के नशे को छोड़ो और इन वचनों से अपने जीव को जागृत करो।

ए माया देखो न्यारे होए, भई तारतम की रोसनाई दोए।
जो बानी श्री धनिएं दई, सो आतम के अंदर तुम क्यों न लई।। ६७ ।।

तारतम की वाणी से इस माया से अलग होकर देखो। यह वाणी श्री राजजी ने दो तनों से कही है। इसे तुम आत्मा के अन्दर क्यों नहीं लेते ?

Nijanand App

माया गुन सब करो हाथ, पेहेचानो प्राण को नाथ।
अब एता आतमसों करो विचार, कौन वचन कहे आधार।। ६८ ।।

माया के गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में करके अपने प्राणनाथ को पहचानो। अब इतना आत्मा से विचार करो कि अपने प्रीतम ने यह कौन से वचन कहे हैं?

जोलों जीव विचार विकार न काटे, ज्यों छींट ना लगे घड़े चिकटे।
इंद्रावती कहे सुनो साथ, जिन छोड़ो अपनो प्राणनाथ।। ६९ ।।

जब तक जीव विचार कर संशय (विकार) नहीं मिटाता, तब तक यह वाणी चिकने घड़े की तरह उस पर टिकेगी नहीं। इसलिए श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे साथजी ! सुनो और अपने प्राणनाथ (धनी) को मत छोड़ो।

फेर फेर ना आवे ए अवसर, जिन हाम ले जागो घर।
थोड़े में कह्या अति घना, जान्या धन क्यों खोइए अपना।। ७० ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि ऐसा समय फिर नहीं मिलेगा। बिना चाहना पूरी किए घर में जागना ठीक नहीं है। मैंने तुमको यह थोड़े में बहुत कुछ कहा है। जानकर भी अपने धन (प्राणनाथ) को क्यों गंवाएं?

हम आगे ना समझे भए ढीठ, तो दई श्री देवचंदजीऐं पीठ।
ना तो क्यों छोड़े साथ को एह, जो कछू किया होए सनेह।। ७१ ।।

हम पहले ढीठ हो गए। जब श्री देवचन्द्रजी गए तब हम समझ नहीं पाए। अगर हमने उनसे प्रेम किया होता, वह अपना साथ छोड़कर न जाते।

अब फेर आए दूजा देह धर, दया आपन ऊपर अति कर।
अब ए चेतन कर दिया अवसर, ज्यों हंसते बैठे जागिए घर।। ७२ ।।

अब वही (धाम-धनी) दूसरा तन धारण करके मेरे अन्दर आए हैं। बड़ी कृपा से हमें जागृत करके धनी की पहचान करने का समय दिया है, जिससे हम हंसते-हंसते घर में जागें।

सब मनोरथ हुए पूरन, जो ए बानी विचारो अंतस्करन।
ए तो इंद्रावती कहे फेर फेर, जो धाम धनी कृपा करी तुम पर।। ७३ ।।

मन के सभी मनोरथ पूर्ण हो जाएंगे, यदि इस वाणी को चित्त में विचार कर देखोगे। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि यह तुम्हारे ऊपर धाम धनी ने कृपा की है जो दुबारा तन धारण करके आए हैं।

॥ प्रकरण ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ ७३५ ॥

प्रगट बानी प्रकास की

सोई ने सोई सूते क्या करो जी, या अगिन जेहेर जिमी मांहीं जी।
जाग देखो आप याद करो, ए नींद निगल गई जीव के तांई जी।। १ ।।

सुन्दरसाथजी ! इस अग्नि के समान जलाने वाली जहरीली जमीन में सोकर क्या करोगे? सावचेत (सावधान) होकर याद करो और देखो यह माया जीव को निगले बैठी है।

ए नींद तिनको ले गई रे, जो नाहीं साथी आपन जी।
इन ठगनी जिमिऐं बोहोतक ठगे रे, तुम जिन सोओ इत खिन जी।। २ ।।

यह माया उनको निगल गई है जो अपने परमधाम के साथी नहीं हैं। इस ठगनी माया ने बहुतों को ठगा है। तुम यहां पर एक पल के लिए भी मत सोना।

Nijanand App